P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-11* July- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सीतापुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का समीक्षात्मक अध्ययन

Critical Study of Job Satisfaction of Government and Non-government Teachers of Sitapur District

Paper Submission: 04/07/2021, Date of Acceptance: 20/07/2021, Date of Publication: 23/07/2021

नितिन कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर
(बी0एड0)
ए.एन.डी. टीचर्स ट्रेनिंग
(पी.जी.) कालेज,
सीतापुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Abstract

प्राथमिक स्तर पर शिक्षक शिक्षिकाओं के कार्य, वेतन, समस्याओं का निवारण, भविष्य निधि, पेन्शन, स्थायी नियुक्ति कार्य करने की दशा उन्नति के अवसर आदि महत्वपूर्ण एवं विशेष बिन्दु है। इस अध्ययन में प्रमोद कुमार एवं डी0एन0 मुथा की शाब्दिक प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यकीय प्रविधियाँ प्रयोग में लाई गयी और परिणाम प्राप्त किये गये कि शिक्षक-शिक्षिकाओ की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नही है। अतः शिक्षक-शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है। शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि समान है।

At the primary level, the work of teachers, salary, redressal of problems, provident fund, pension, condition of permanent appointment work, opportunities for advancement etc. are important and special points. Verbal questionnaire of Pramod Kumar and D.N. Mutha has been used in this study. Statistical methods were used for data analysis and results were obtained that there is no significant difference in job satisfaction of teachers. Therefore, there is no effect on the job satisfaction of the teachers. So the job satisfaction of the teachers is the same.

मुख्य शब्द: कार्य सन्तुष्टि, प्राथमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक शिक्षिकाएँ ।

Job satisfaction, primary level government and non-government teachers..

प्रस्तावना

शिक्षक-शिक्षिकाये हमारे विद्यार्थियों की आशा है राष्ट्र के नक्शे पर सुमन और उसकी पवित्र आकांक्षा के आकाशदीप का दूसरा नाम है-शिक्षक-शिक्षिकायें इसे हम समाज का कर्णधार या सूत्रधार कह सकते हैं। इसके पवित्र अस्तित्व में ही हमारी सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन पद्धति की गरिमा साँस लेती है और भविष्य उज्ज्वल बनता है। ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्र, विद्याविहीनः पशुः (भतृ हरि के नीति शतक से)

विद्या ददाति विनयम् विनयात् याति च पात्रताम्
या सतता् धन आरनोति, धनात्ः धर्मः तब सुखम्।।

वैदिक काल से ही भारतीय शिक्षा का प्रारम्भ माना गया है एवं शिक्षा की आधारशिला वेदों पर आधारित है। आर्यों का मानना है कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास शिक्षा पर आधारित होता है।

शिक्षार्थी को बिना ध्येय निर्धारित किये अपने जीवन में यथेस्ट सफलता नहीं मिल पाती है। यदि शिक्षार्थी को यह ज्ञात होता है कि उसे क्या करना है और किस प्रकार से वह अपने जीवन को सफल बनाने में सफल हो सकेगा। इस प्रश्न का उत्तर उसे प्राथमिक स्तर की परीक्षा के साथ ही मस्तिष्क मे आ जाना चाहिए। जब शिक्षार्थी अपना ध्येय निश्चित कर लेता है तो उसके सामने साध्य वस्तु हर समय विद्यमान रहती है और साधनों को सफल करने में सफलता रहती है। माना किसी विद्यार्थी का लक्ष्य शिक्षक बनना है तो वह हाईस्कूल की परीक्षा पास करने में ऐच्छिक विषय का चुनाव करेगा। विद्या एवं विवेक का सहारा लेकर अपना पक्ष सुदृढ़ बनाने का प्रयास करेगा। इसके साथ ही उसमें नैतिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास होगा।

शिक्षा के उद्देश्य मानव के उद्देश्यों से अलग नहीं हैं शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित कुशलताओं योग्यताओं एवं अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करती है मानव जीवन धर्माचरण के द्वारा अर्थ और मोक्ष अर्थात् सतचित आनन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त करना है।

डॉ0 अल्तेकर ने प्राचीन भारत में शिक्षा के उद्देश्यों की गणना करके यह बताया कि शिष्य को पवित्रता और धर्म की भावना चरित्र निर्माण व्यक्तित्व का विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों की भावना और राष्ट्रीय संस्कृति के विस्तार की दृष्टि से शिक्षा देना प्रासंगिक है।

स्वामी विवेकानन्द और अरविन्द घोष ने कहा है कि हम जिस शिक्षा को खोज रहे हैं वह एक भारतीय आत्मा आवश्यक स्वभाव एवं संस्कृति के अनुरूप ही है। विद्या के अर्जन में गुरू का महत्व विशेष हैं। गुरू के सहयोग से बालक विद्या के मार्ग में बढ़ता है। वास्तव में विद्यालय गुरू की ओर शिष्य के प्रति आत्मदान है विद्या का व्यवसायीकरण नहीं हो सकता है। एक शिक्षक अपना कार्य समर्पित भाव से कर सकता है। जब वह अपने कार्य से पूर्णतया सन्तुष्ट हो कार्यसन्तुष्टि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम कोर्नहाउजर ने 1930 में किया था। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो शिक्षक शिक्षिकाओं की भूमिका अहम् है क्योंकि उनके द्वारा सुव्यवस्थित समाज एवं आदर्श राष्ट्र का निर्माण किया जाता है। यह पता करने के लिए कि प्राथमिक स्तर के शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि की स्थिति क्या है। इसके प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया है और परिणाम प्राप्त किये हैं।

साहित्य अवलोकन

निगम. के. सेल्वाबशाकर, एस., सुरुलिवेल. एस टी (2018)

निष्कर्ष स्वरुप इन्होने पाया कि सरकारी एवम गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षको की कार्य सन्तुष्टी में सार्थक अंतर है साथ ही महिला एवम पुरुष शिक्षकों

की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है और यह भी पाया कि कार्य संतुष्ट शिक्षक अधिक उपलब्धि रखने के साथ-साथ उनमे अन्य मौके भी है।

किमुन्टोमुसोने इस्थर एवम् अन्य (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि अविवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में विवाहित शिक्षकाएं अपने कार्य से अधिक सन्तुष्ट थीं ।

सिंह रंजीत (2010) ने पाया कि ग्रामीण शिक्षक शहरी शिक्षक की तुलना में ज्यादा कार्य सन्तुष्ट है और उनकी कार्य सन्तुष्टि पर नीति का प्रभाव पड़ता है।

कौर सतवीन्दर (2011), ने यह पाया कि पुरूष शिक्षक की अपेक्षा महिला शिक्षकों का प्रतिबल का स्तर निम्न था। शहरी शिक्षकों मे ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अधिक व्यवसायिक सन्तुष्टि थी।

निष्कर्ष शिक्षक शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन एवं परामर्श में सहायक होगा कि वे किस प्रकार अपने कार्य सन्तुष्टि को बढ़ा सके। जिससे उनके ज्ञान एवं प्रशिक्षण का सर्वाधिक लाभ मिल सके जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक होगा और वे योग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकेंगे ।

चर

कार्य सन्तुष्टि, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकायें

उद्देश्य

सीतापुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का समीक्षात्क अध्ययन करना।

परिकल्पना

सीतापुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है ।

न्यादर्श

इस प्रस्तुत अध्ययन में 45 प्राथमिक शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के शिक्षक शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।

तालिका संख्या-1

समीक्षात्मक समूह	शिक्षक संख्या
शासकीय विद्यालय	200
अशासकीय विद्यालय	200
योग	400

परीक्षण

इस अध्ययन में कार्य सन्तुष्टि डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डी0एन0 मुथा, द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया है।

विधि

प्रतिनिधि कार्य न्यादर्शन में शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि मापनी का प्रशासन एवं फलांकन के उपरान्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए सांख्यकीय विधि का उपयोग करके परिणाम प्राप्त किये हैं।

विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान में समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार की पुस्तक, ज्ञान कोशों पत्र-पत्रिकाओं शोधा तथा अभिलेखों आदि से जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिली है। इनमे से मुख्य रूप से बेगम एवं धर्मागदन ने (2000) द्वारा यह पाया कि महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि पुरूषों की अपेक्षा अधिक थी।

गुप्ता एवं गेहलावत (2013) ने अपने परिणाम मे पाया कि पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का कार्य प्रेरणा के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया।

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों मे तभी प्रतिबिम्बित होता है जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाए।

तालिका संख्या-2

समीक्षात्मक समूह	शिक्षक संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	पी मान
शासकीय विद्यालय	200	49.21	9.59	0.71	< 0.05
अशासकीय विद्यालय	200	49.92	9.79		

स्वतन्त्रता अंश - 398

0.05 स्तर पर सार्थकता - 1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता - 2.59

उपरोक्त तालिका अध्ययन करने से यह पता चला है कि प्राथमिक स्तर में शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि

में सार्थक प्रभाव नहीं है। प्राथमिक स्तर की 200 शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान 49.21 तथा मानक विचलन 9.59 है। जबकि 200 शिक्षिकाओं का मध्यमान 49.92 तथा मानक विचलन 9.79 है।

अतः उपरोक्त तालिका के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर में शिक्षक शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि मे सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

विवेचना

कार्य संतुष्टि का क्रान्तिक मान 0.71 आया है। (सन्दर्भ तालिका क्रम-02) जो सार्थकता के न्यूनतम सारणीमान से कम है। यह परिणाम यह प्रदर्शित कर रहा है कि शिक्षक-शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

निष्कर्ष

सीतापुर जिले के शासकीय एवं अशासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि समान अन्तर नही है। निष्कर्ष शिक्षक शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन परामर्श में सहायक होगा कि वे किस प्रकार अपने कार्य संतुष्टि को बढ़ा सके और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक हों और वे योग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सके।

सुझाव

शिक्षक- की दशा में सुधार किया जाना चाहिए उचित वेतन भत्ते आवास सम्बन्धी सुविधायें दी जानी चाहिए।

शिक्षक शिक्षिकाओं को प्रशिक्षण प्रदान करते समय उन्हें मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का प्रशिक्षण देना चाहिए।

शिक्षकों की समस्याओं के लिए समय-समय पर बैठक एवं सभा का आयोजन करना चाहिए साथ ही सेमिनार कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन भी आवश्यक है।

शिक्षक शिक्षिकाओं की मानसिक अस्वस्थता को दूर करने के लिए विद्यालय मे मनोवैज्ञानिक सहायता की व्यवस्था की जानी चाहिए। अध्यापक का ज्ञानी होने के साथ-साथ चरित्रवान होना मूल्यवान है क्यांकि उसके व्यक्तित्व व व्यवहार का प्रभाव विद्यार्थी पर पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Azim, M.T. and Haque, MM. and Chowdhary R.A. (2013) Gender, Marital Status and Job Satisfaction and Empirical Study international, review of management of Business Research Vol-2, Issues to, page 488.*
2. *Dixit, Meera (1993) : Job Satisfaction Scale : National Psychological Corporation, Agra.*
3. *Olumese. I.B. Blessing, O. and Vennela, O. (2016) marital status and teacher Job performance public secondary school in edu state international Journal of social Reverence and concern. Vol-4 issues Page 33*
4. *Beuam L Dhamedam. Sex differntation in job satisfaction of college teachers in Kerla state. Indian Journal of Psychometry and Education. 2000. 3 (1) : 67-77*
5. *Lateefa Begum and Dharm Gadan (2000) : Sex Differences in Job Satisfaction of College Teachers in Kerala State, Indian Journal of Psychometric and Education 31 (1), 67-71*
6. *Rebero & Bhargava (2001) : Job Satisfaction Among College Teachers, Indian Journal of Psychometry and Education, 32 (2), 139-142.*
7. *Sari H. An analysis of burnout and job satisfaction among Turkish special school headteachers and teachers' and factors affecting their burnout and job satisfaction, education & studies 2004 : 30 (3) : 291-306*
8. *www.google.com*
9. *अनुराधा, के तथा कलाप्रिया, सी (2015), "जॉब सटिसफेक्शन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचर, एडुट्रैक्स, 14 (08) अप्रैल 36-39*
10. *लाल रमन बिहारी (2012), "भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याओं रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ संख्या 333*
11. *बैस्ट जॉन डब्ल्यू एण्डखान जैम्स वी, 2009 "रिसर्च इन एजूकेशन" पी0एच0आई0 लर्निंग प्रा0लि0, नई दिल्ली, 2009*
12. *पी. उषा, शशिकुमार पी. (2007): टीचर कमिटमेण्ट एण्ड टीचर्स सेल्फ कॉन्सेप्ट एज् प्रडिक्टर्स ऑफ जॉब सटिस्फैक्शन, एजुट्रैक्स, वॉल्यूम 6 (12): अगस्त, नीलकमल पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड हैदराबाद।*
13. *मर फी, एल0 डिनियल (2012), "Value added models in the evaluation of teacher effectiveness : A comparison of models and outcomes", Research Report,, yuanyuan MC Bridge May 2012.*
14. *Nordin, M. N. B., Mustafa, M. Z. B., & Razzaq, A. R. B. A. (2020). Relationship between Headmasters' Leadership, Task Load on Special Education Integration Programme Teachers' Job Satisfaction. Universal Journal of Educational Research, 8(8), 3398-3405.*
15. *Ali, S. A. (2021). Financial Elements In Job Satisfaction Of Special Education Teachers In Malaysia. Turkish Journal of Computer and Mathematics Education (TURNCOAT), 12(11), 5229-5233.*
16. *Halder,K.U.Roy,R.R.(2018),Teacher Adjustment and Job Satisfaction of Secondary School Teacher. IAETSD Journal for Advanced Research in Applied Science,Vol.5, Issue.3,page No.468-476.*